अथ समास प्रकरणम् -

१०४. समर्थः पदविधिः - २।१।१

यह परिभाषा सूत्र है। पद संबंधी नियम समर्थ पदों की होती है। जहाँ सामर्थ्य होगा, वहाँ पदविधि होती है। इस प्रकार समास शास्त्र में जब दो पद एक साथ मिलकर एक ही जाने का सामर्थ्य रखते हैं, तब समास होता है। वह सामर्थ्य दो प्रकार का होता है -

① व्यपेक्षा - किसी भी वाक्य के माध्यम से हम अपनी धारणा को प्रकट करते हैं, जिनमें पदों के बीच एक संबंध होता है और यह संबंध आकांक्षा, योग्यता और सन्निधि के कारण होता है। यथा - गंगायाः जलम् - यहाँ 'गंगायाः' पद अपने पूरे अर्थ को स्पष्ट नहीं करता है और किसी अन्य पद की आकांक्षा होती है, जैसे ही 'जलम्' (योग्यता) पद की सन्निधि उससे होती है, पद व्यपेक्षा रूप सामर्थ्य से पूर्ण अर्थ पद होकर स्पष्ट अर्थ की प्रतीति कराता है 'गंगाजलम्' ३ हो

यदि यह व्यपेक्षा नहीं हो तो 'पठ पुस्तकं रक्षितं गृहमध्ये' इस वाक्य के कहने पर सभी समर्थ पद हैं है किन्तु उनका समस्त पद नहीं हो सका, क्योंकि आकांक्षा और सन्निधि का परस्पर अभाव है। 'पुस्तकम्' इस पद का 'पठ' के साथ अन्वय है, 'रक्षितम्' के साथ नहीं 'पुस्तकं' और 'रक्षितम्' में परस्पर आकांक्षा संबंध नहीं होने के कारण व्यपे. सा सामर्थ्य के अभाव में दोनों पद समस्त नहीं होते।

दूसरा उदाहरण 'मन्दिरस्य मूर्तेः पूजा' इस विग्रह में 'मूर्तेः पूजा' का षष्ठी तत्पुरुष समास हो जाने के बाद 'मन्दिरस्य' के साथ समास नहीं होगा क्योंकि इनमें व्यपेक्षा संबंध नहीं है

Scanned with CamScanner

(2) एकार्थीभाव - यह सामर्थ्य का दूसरा रूप है। इसमें हरेक पदों के अर्थों की एक साथ प्रतीति होती है। अर्थात् समस्त पदों में एकार्थी भाव देखा जाता है। यथा - शिवस्य भक्तिः - ये दोनों पद अपने-अपने पद के स्वतंत्र अर्थ की अभिव्यक्ति देते हैं किन्तु जब दोनों समस्त पद हो जाते हैं 'शिवभक्तिः' तो एक ही अर्थ की प्रतीति कराते हैं, इसे एकार्थीभाव सामर्थ्य कहते हैं।

905. प्राक्कडारात्समासः - 2।1।3

'कडाराः कर्मधारये' सूत्र से पूर्व तक समास संज्ञा का अधिकार क्षेत्र है, इस सूत्र का यह अर्थ स्पष्ट होता है। अतः यह से आगे आनेवाले सूत्रों में समास की अनुवृत्ति होगी।

906. सह सुपा - 2।1।4

यह विधिसूत्र है, जिसका अर्थ है सुबन्त (सु-से सुप् = तक 21 विभक्तियाँ) के साथ सुबन्त पद का समास होता है।
परार्थ के बोध को 'वृत्ति' कहते हैं। प्रत्यय या अन्य पद के अर्थ को साथ लेकर जो विशिष्ट अर्थ व्यक्त होता है, उसे परार्थ कहते हैं। कृत्, तद्धित, समास, एकशेष और सनाद्यन्त धातु रूप - ये पाँच वृत्तियाँ होती हैं।
'वृत्ति' के अर्थ को स्पष्ट करने वाले वाक्य को 'विग्रह' कहते हैं। यथा - पुत्रीयति - आत्मनः पुत्रम् इच्छति - यह कहकर 'पुत्रीयति' के अर्थ को स्पष्ट करने वाला वाक्य विग्रह है। यह लोक में प्रयुक्त होता है अतः यह लौकिक विग्रह कहलाता है।
जो कि लोक में व्यवहार नहीं होता है उसे अलौकिक विग्रह कहा जाता है। यथा - पूर्वम् भूतः (लौ० वि०)
अ० वि० - पूर्व + अम् + भूत + सु।

Uma Pathak
Deptt. of SKT.